

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि  
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

## Contents :-

Page 1

- 1) Sharada Stotra.
- 2) Editor's Foreword.
  
- 1) Master Zinda Kaul by AK Khazanchi.
- 2) Parts of Body Head.

- 1) How to read Kashmiri Devanagri script.

- 1) Isha Upanishad by AK Razdan.
- 2) A collection of Single verses by Shridharji Bhatt.

- 1) Kids Rhymes in Kashmiri.
- 2) Sharada Varanmala.
- 3) History of Sharada Lipi by Rakesh Koul.
- 4) Shiv Vandana by Indira Kilam.

- 1) Abhinav Gupta by Vinutha Saligram.

- 1) Kashmir by Kishni Pandita.

- 1) Koyee Apna Sa by Kusum Warikoo.

- 1) Swami Parmanadaji by AK Razdan.

- 1) Core Sharada Team at Vishva Sarasavath Sangh.
- 2) Sharada Diwas 2022.

- 1) Artwork for the month on Social media.
- 2) Donation appeal.
- 3) Contact Details.
- 4) Activity Chart of previous month.

## भाद्रकीय

### नवरेत्र भूगराप

### दिनु नव वद्ध की मुचकाभनार्हि

**भा**द्र जो का भजीना श्रद्धुंड की बृहु रक्षा प्रारंभ में सिवगाति, द्विर पीय गाल्लैं भै विणानभद्रा कै प्राचार, बुक्ति उर उम की संग उर शंउ भै “टि कम्भीर द्वाङ्गलस्स” का गलगित्रा पूछु में यह प्राकून कै भगी खण्डनावै शंउः भानव कलवान कै लिए ठीक भागितु दो। भेरा ट्रैभा भानना कै कि ऐ कैरै सी खण्डन खण्डी कै उम में शंउः कैरै लालु यवमृ कैत्रा कै। मुख दुभ या त्रै श्रद्धुंड प्रूप है या निराम व द्वापी पर दुभं यवपै शुप कै पूछु की उम्हा भै भम्हार्हि कर लैना गायिये।

कैर मारदा भभुद मारदा लिपि कै पैद्धकून में बृहु रक्षा। यह शुप कै दुभारे भाज्ज भाद्र की गयिविहियैं में पुग दे गया कैगा।

बृक्तिगउ शुप में भाद्र लिंदु कैल एकी की पुमुक “भूरार्हि” त्रै भुखे एकं शुकु श्रद्धुंड प्रूपितु किया, वज्ञी भैर भित्र कै घर एक द्वाष में लिआपी कमभीरी भै रामायन द्वायने व पठने का यवमर भिलने पर द्वाष फवा। भुखे द्वामद्वे “रेद” एकी, भैप्रैर कमभीर कै रफने वाले, की कमभीरी द्वेवनागरी भै लिआपी “याद्व द्वे द्वे द्वे” एकी पठने का उभर भिला। द्वै यभन लाल ट्रैम्हा एकी पुमुक “कैमुर मक्तिवार्हि” द्वा एक कमभीरी एनने वाले कै यवमृ पठनी गायिया। उम पुमुक में कमभीरी पंछित्रै की “माकु” भानुउः कै रारे भै श्रद्धी पूकार में द्वाष्टा की गर्ह कै। भेरा यह पिरेद्वन कै कि भाद्रिका कौ द्वा एक प्रांक कमभीरी द्वेवनागरी पठने व लिआपने का प्र्याम यवमृ कर्हे लिंभ में यह विचित्र लैयैं का लाल लै भक्तें।

दुभारा प्र्याम कै कि भाद्रिका में निरंतर कुक्क छित्र विध्यैं पर लिआपे व पूकामितु कर्हे। शुपा कै शुप कै यह पर्मद्व मु रक्षा कै। शुप कै भुज्यैं / एपुल्लैं कै प्राच में राप कै दुभ निरंतर प्र्याम कर्हे रहेंगे। भाद्रिका की भद्रकीय ईम/भभुद त्रै यह निरूप लिया कै कि उम भाद्र कै उपरंउ भाद्रिका द्वा त्रै भाद्र में पूकामितु कैगी। उम कारार्हि यगली भाद्रिका यह शुन ३०३३ में पूकामितु कैगी।

कुलमीप एर

# लोलु दयम पाठ्य / लोलु दयस प्रार्थना

**मा** स्टर जिंदु कोल जी की पुस्तक स्मरण, जो कि श्री ए के राजदान जी ने हमे भेजी, से उन की कशमीरी में लिखी कविताएं प्रस्तुत हैं। इन को श्री ए के खजांची जी ने कोर शारदा समूह प्रोत्साहित कशमीरी देवनागरी में लिखा है।  
योर आमुत गिंदुने

१. वुछिम गथ चान्य देवागथ,  
चै विन दय नो संरय लोलो।  
मे अन्दर कर पनुन मनदर,  
बु चैय पूजाह करय लोलो॥
२. बु चाने वेरि सोंबरावय,  
अछव किन्य रंग रूपुक रस।  
कनव किन्य शबदु साजुक मस,  
अनिथ खास्यन बरय लोलो॥
३. मे कुन वुछ वुछ आसान छुख,  
दूरि रूजिथ आसमानन मंजा।  
गुपिथ छुख दासतानन मंजा,  
यि दूर्घ नो ज्ञरय लोलो।
४. फिजा त्राविथ मे खनिमुत्य जिस्य,  
जमीनस तल तु पूरन्य छिम।  
स्यठा देवार लुहरन्य छिम,  
चै रोस्तुय क्याह करय लोलो॥
५. बु छुस पोंपुर चै दीपस पथ,  
चंटिथ यिम जामु करहा गथा।  
दिहम नय जामु चंटनच वथ,  
क्योमाह ह्युव मा मरय लोलो॥
६. नितम पम्पोश पादन तल,  
तिमन हुंद बोम्बराह सूजिथ।  
कंड्यन प्यठ छुस मेरे रूजिथ  
बु चान्ये आसरय लोलो॥
७. जमीनस जन्मुकिस वंविमुत्य  
अशकु दुरदानु कैह बंविमुत्य  
अछन मंज छिम रछिथ  
थविमुत्य  
तिमय खावे जरय लोलो॥
८. यिमन जोयन अन्दर यैदुवय,  
छु चाने सहजु दरमुक ज़ल।  
बठ्यन हुंद छुस सम्योमुत मल,  
मै चावुम आगरय लोलो
९. पनुन मे तेजकुय आगुर  
यिमन जर्रन अन्दर बासुन  
कुन्यर बाविथ यि दुय कासुम  
गटे हुंदि गाशरय लोलो॥

भा भूर लिंदु कैल स्त्री की पुभुक  
भूरा, ऐ कि मी ए के गाल्लान स्त्री  
ते कृचंहुस्त्री, मे उन की कमभीरी भै  
लिएषी कविताँ धूपुरु जै। उन के मी  
ए के परंपरी स्त्री ते कैर मार्दा  
भूक पैद्ध दिउ कमभीरी देवनागरी भै  
लिएषी जै।

वैर मुभु गिंदुने

०. तुकिम गघ मातृ देवागघ,  
ऐ विन दय ते मंगव लैनै।  
भे यनुर कर पनुन भरद्दर,  
तु ऐय पुरक करव लैनै॥
१. गु याते वैरि भैरगवय,  
भैकव किनु रंग रुपुक रमा।  
कनव किनु मग्दु भाल्क भम,  
यनिष आभून गरव लैनै॥
२. भे कुन तुक तुक युभान छाप,  
द्विरु लिंष युभान भेल्ल।  
गुपिष छाप मामुन भेल्ल,  
यि द्वदर ते लारव लैनै।
३. दिर दैविष भे अपिभु लिंमु,  
स्त्रीनम उल तु पुरु त्रिभा।

- भूरा देवार तुकुरु त्रिभा,  
ऐ रे भुव कुक करव लैनै।
५. तु रु रुम पैपुर ऐ यीपम पघ,  
ऐरिष विभर्मु करक गघ।  
दिभम नय र्मु युरु रुम वघ,  
कुम्भाक फ्रव भा भरव लैनै॥
६. निउभ पभेम पार्दन उल,  
उभन कंद रे भुगाक भुलिष।  
कंदुन पू० रुम भर रुलिष  
तु याते युभरव लैनै॥
७. स्त्रीनम स्त्रुकिम विभुतु  
यमकु द्वरानु कैक द्विभुतु  
यैकन भेल्ल किम द्विष विभुतु  
उभय आवे लारव लैनै॥
८. विभन ऐयन यनुर वैद्ववय,  
द्व याते भक्तु द्वरभुक रुल।  
गृन कंद रुम भभेल्ल भल,  
भे यावुभ मुगरव लैनै॥
९. पनुन भे उर्मुक युगुर  
विभन रुरन यनुर गभुन  
कुरुर गविष वि द्वय काभुभ  
गए ऊर्दि गामरव लैनै॥

## Parts of the Body (Face/ इष)



# Kashmiri Devanagari Script – How to Read & Write

Kashmiri Devanagari script was originally standarised in 2002-03 as recommended by an Expert Committee headed by Dr. Roop Krishan Bhat, after discussion on the same from 1995 to 2002. Most of the literature written during that time and after has been written following these standards. Even current Iphone Kashmiri Devanagari keyboard is developed on this basis. As per this standard the following Vowels and Consonants are used in writing Kashmiri in Devanagari Script.

## Hindi Vowels used in Kashmiri mostly before 2009

अ	आ	ॐ	ऑ	ऋ
	ा	॑	ौ	॒
अख	आराम	अँछ	लॉर	बु

अु	ओ	ओ	औ	अं
ू	ौ	ो	ै	॑
तुर	दोर	मोल	औशद	अंग

इ	ई	उ	ऊ	ए
ි	ී	ු	්‍ර	ෑ
खिर	शीन	बुथ	जून	रेल

ऐ	ऐ
ැ	ැ
वैकुंठ	रेह

## Consonants

क	ख	ग	च	छ	ज
ट	ठ	ड	त	थ	द
न	प	फ	ब	ম	য
র	ল	ব	শ	স	হ

## Special Consonants

চ	ছ	জ
---	---	---

## Consonants NOT used.

ঘ	ড	ঢ	ঙ	ঝ	ঞ	ধ	ষ	ক্ষ	ঙ্গ
---	---	---	---	---	---	---	---	-----	-----

Dept. of Higher Education, Central Hindi Directorate, Ministry of HRD modified the standard in the year 2009. A Kashmiri Devanagari Unicode was accordingly developed, which is now available on Android phones. Sh. B.N. Betab, Sh. Shashi Shekhar Toshkhani and others were part of the team. As per the same the following Vowels are used in writing Kashmiri in Devanagari script.

## Kashmiri Devanagari – 2009 version

अ	आ	अ	आ	अ
	ा	'	ा	्
अখ	আরাম	অঁছ	লাৰ	বু

অু	ও	ো	ৌ	অং
ূ	ৌ	ো	ৈ	্
তুর	দোর	মোল	ঔশদ	অংগ

ঁ	ঁ	ই	ই	উ
ী	ী	ু	ী	ু
খঁড	গঁড	খির	শীন	বুথ

ঁ	ঁ	ই	ই	উ
ী	ী	ু	ী	ু
জুন	রেল	বৈকুঠ	রেহ	

We felt the need for sharing this to enable Kashmiri (Devanagari) readers to understand the literature that is available in public domain. We, at Core Sharada Team Foundation, for the sake of uniformity have decided to follow the 2009 standard, as this is essentially being used for writing in Sharada script by Core Sharada Team.

There may sometimes be certain deviations due to the contributors of the articles for Maatrika.



By A.K.Razdan

## मृ रंगावामैपनिधम्॥

**रंगवैद** के ग्रालीभवं मण्डा य के रंगावामैपनिधम् के  
नाभमे सन सत्ता है उपनिधम् के ०३उपनिधम्  
में पूर्वभान प्राप्त है। उपनिधम् में विराट भृषि के  
मनुजउ द्वय एगत्ता और स्त्रीवन के रंगव का मुवाम कह  
कर रंगव के भवत्ता भी, भवत्तमभूत्त भूत्तका गेप करते फार  
स्त्रीवन के मनुमामन भें गरिभाभय दंग में भाष भेंधपूरक  
स्त्रीते फार उभी के भावाक रुप के सन का निर्माण  
गया है। रंगावामैउपनिधम् में कुल ०३ भंड हैं और यह ०३  
भंड मीभद्धा रुगवज्जीता के ०३ मण्डावें की उरु भद्रपूरक  
कहे गच्छ हैं। उपनिधम् का प्रारंभ निखलीपित्त मान्त्रि  
पाठ में लेता है....

ऐ पुरुषः पुरुषिं पुरुषा पुरुषमृष्टे।

पुरुषमृपुरुषाभास्य पुरुषेवावसिष्टुते।  
मण्डा

रंगव परिपूर्ण है और ऐसे कि वे पुरी उरु में पुरु हैं, मनुर उपनिधम् के वाले भारे उद्धव श्लोक के बह द्वय एगत्ता पुरु  
उकारे के रुप में परिपूर्ण हैं। पुरु में से कुकुरद्वय के ते  
हैं वह सी मपने मूप में पुरु के ते। परम पुरु या भवेपरि  
परम भट्ट पुरु पुरुषेत्तुभ रुगवान है, उप परिपूर्ण में घट्टपि  
किती सी पुरु उकारे मूदुत हैं उर सी वे परिपूर्ण की  
रक्त हैं। उपनिधम् का पहला भंड ....

रंगावामैभिं भवं वद्विष्ट एगत्त एगत्ता।

उन दृक्षेत्र शुक्षीषा भा गणः कमृष्टिम् प्रभा॥

मनुवाम....

उप रुद्धाम् के रीत्ता की पृष्ठेक एक यथवा गेत्तन भर वभुत्ति  
रुगवाना मूरा निष्ठित्त है और उच्ची कीभभृत्त है। मनुर उपनिधम्  
भनुष्ट के ग्रालिय कि मपने लिय केवल उच्ची वभुत्त के  
भीकार करे से उप केलिय मूरमृक है और से उपके  
प्रारद्ध के रुप में नियत कर दी गई है। किमी और के प्र  
या वभुत्त की कमी सी भन मेंलालभा भड़ करे॥

ऐसे कि रुगवाना पुरुभा - भर पुरुम् में पुरु है, उन पर  
हेत्तिक पृष्ठिक के नियमलागु हैं की केंद्रभूत्तन नक्ती है,  
कैंकि भारे नियम उनके निष्ठित्त में रक्त है, परन्तु स्त्रीवन  
उषा एक पराद्ध हैं पृष्ठिके नियमें मूरा और मनुतः  
रुगवाना की मक्तु मूरा निष्ठित्त है। रंगेपनिधम् से  
घट्टवैद का थंप है उप के पहले जी भंड में रुद्धाम् में मित्त  
मभमु वभुत्त केभ्वाभिष्ट के विषय में एकारी भिलती है। उप  
रुद्धाम् केशीत्त के पृष्ठेक वभु पर रुगवाना केभ्वाभिष्ट की  
भृषि रुगवज्जीता के भात्तवं मण्डा ये सी की गई है। पृष्ठिक  
के भर उड़ - पृष्ठी, एल, यष्टि, वाय, मुकाम, भन, इम्हि उषा  
मुरुकार - रुगवान की मपनामूरा हेत्तिक मक्तु में भभुत्तित  
है एव कि स्त्रीव मूरा गेत्तन मक्तु रुगवान की उम्हुत्त  
मक्तु(परा मक्तु) है। यह हैं सी पृष्ठियं या मक्तुयं  
रुगवाना में उम्हुत्त है और मनुउगद्धा से कुकुरीविमृभान है  
उप भर के नियत्त रुगवाना जी है, पृष्ठेक वभु उन परम  
पुरु की भभुत्त है। उप रंगवीयमभृत्त में से कुकुरी की रुभारे  
प्रारद्ध कर्त्तैं के मनुभार नमें प्राप्त फसु है, नमें उभी में मनुत्ति  
प्राप्त हैं। ग्रालिय॥



By Shridharji Bhatt

## A collection of scriptures in single verse

**A**ll of us know - In Hinduism there are many big and famous Indic Texts like - Ramayana, Mahabharata and Bhagavata etc. Here such big scriptures are given in just one verse each. All the four verses are written in shardula vikridita / शार्दूल विक्रीडित वृत्तः - Varna/ वर्ण chandas. We will have a look at all of them in our upcoming editions.

रामायणम्॥

पूर्वं राम तपोवनाभिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्  
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।  
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्  
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहनं एतद्विरामायणम्॥

Once upon a time, Lord Rama went to the forest , he chased and killed a golden deer. His wife Seethaji was kidnapped (By Ravana), the bird Jatayu was killed. There were discussions between Ramaji and Sugreeva. Wali(brother of Sugreeva was killed. The sea was crossed( By Hanuman), Lunka was burnt. Later Ravana and Kumbhakarna were killed and this is the story of Ramayanam.

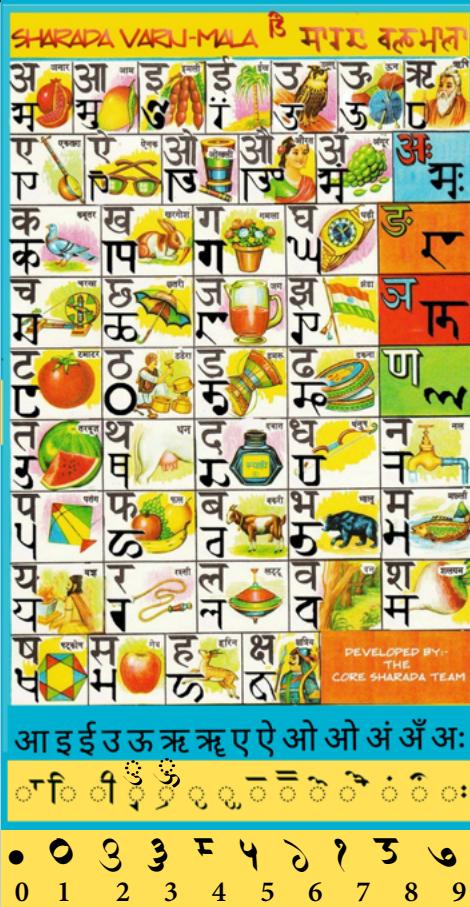
Ramayanam contains seven chapters - Bala Kanda, Ayodhya Kanda, Aranya Kanda, Kishkindha Kanda, Sundara Kanda, Yuddha Kanda and Uttara Kanda containing 24000 verses. This shloka describes the entire Ramayanam.

रामायणम्॥

पूर्वं राम उपेवनाचिगमनं रुद्धा भृगं काञ्चनभा  
वैदेहीकरणं एलवभरणं मुग्रीवमभृत्तम् भा।  
वालीनिग्रहणं मभृत्तरणं लङ्कपुरीदाहनभा  
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहनं एतद्विरामायणम्॥

रिसु रादै आपे उपै वन  
उरु किंके वेलु घ रग्गे पन  
भु कमन छोकुघ केउन  
केउन गीरी भारुकन  
एन छय गिंदान उरुकन

बिश्तु बिश्तु ब्रायो खोतुखो वन  
तोरु किहो वोलुथ बबरे पन  
सु कमन छोकुथ कोतरन  
कोतर बीठी मारुकन  
ज्ञून छय गिंदान तारुकन



## मिव - वचन

By Indira Kilam

मिव-मंकर, मुम्मेव, दिनवन, भद्राँवा,  
ए-ए-ए, गंगा-ण-री, विखण-री, नीलकंठा  
नीलकं०, भीष-ट्वैं, द्वापुरी विख-ए-रैं,  
ध्वं भद्वै, छर्वै कै, घमूं भंडाप दरै।  
गंगा, रभा ल्लां भैं, भद्रा का पा० द्विया,  
भद्रण गुडि रहै ल्लीवन, मभु- मंडेम द्विया।  
पुलवंकारी दुप मिव का, निरुडा ल्लीवन के ट्वैं,  
ल्लीर्कीर्ल नहै कर, नवीनउ के पूमभु ट्वैं।  
कैलनाघ, कैलपन मे, बै० रुज मे पूमवै ट्वैं,  
मूर्दा-मुभा कै रल पर, भेडिनी कै रर लैै।  
गलुडा उ-कुव-इभश उनकी, रै॑ण-यि कै रमाउ,  
मीम-एगा रानूभा, मीउ- भएरिभा ररभाउ।  
ट दिगु० कै धाभी! नघ, रभ मर पर रवा कौं,  
एकनिधृ एकाग्ना का रर ट्वैं भुं-प दरै।  
'ऊ नभः मिवाय' भंड-ए-प ल्लुडा मे भुकु करै,  
काभ, रै॑ए, लै॒रु, भेड, भद्रा का उभम दरै।



### Brief overview of the History of Sharada Script



By Rakesh Kaul

Sharada Lipi traces back to 3<sup>rd</sup> CE, as per the new evidence that has surfaced up lately. New carbon dating research commissioned by the University of Oxford's Bodleian Libraries into the ancient Indian Bakhshali manuscript, provides evidence that this manuscript can be dated to 3<sup>rd</sup> CE. Determining the date of the Bakhshali manuscript is of vital importance to the history of mathematics and study of early South Asian culture testifying to the subcontinent's rich and longstanding scientific tradition.

The Bakhshali manuscript uses an early stage of the Sharada script, and therefore, provides earliest record of this script. Thus, Sharada has existed much before Devanagari, but Devanagari has never been replacement for Sharada. Sharada is mother script to Gurumukhi, Landa and Takri scripts. The use of this script was at its prime between 8<sup>th</sup> and 12<sup>th</sup> century CE in Kashmir and neighbouring areas. This also happens to be the era when Kashmir was rich culturally and spiritually and was the hub of knowledge. This is the time when Sharada Peeth in Kashmir was a well recognized as a seat of learning and was famous all over India and in the neighbouring countries. Large number of books and scriptures were written in Sharada Script during this time. No wonder, there are an estimated 40,000 manuscripts written in Sharada script, which can be found in various libraries in India, United States, Canada and many European countries. Many must have got destroyed and some may be lying with some householders. These manuscripts are believed to be rich source of knowledge about mathematics, astrology, medicine and philosophy.

With the invasion of Muslim rulers and their establishment in India and particularly in Kashmir, Hindu literature including Sharada script faced a serious on slaughter. The script was forced out of usage and became almost extinct. The general population remained deprived of the knowledge of the script as well as the grand manuscripts that were written in this script. Only a minuscule of Hindu community who continued to use Sharada for writing horoscopes remained knowledgeable about this script.



By Vinutha Saligram



## मुमारु मठिनवगुप्त परिचय

**मुमारु मठिनवगुप्त** एक धार्मिक एवं भाद्रितुमामूर्ति के भृत्यनु मुमारु थे। कस्तीरी  
मैव और उत्तर के पर्वतों पर वे भूमीतल्ल, कवि, नाटककार, एन्ड्रमामी एवं  
उक्तमामी थी थे।

उनके उत्तर गंध उत्तरालैक भेंडनकी स्त्रीवनी का विवरण भिलु थे। उनका जन्म मीनगढ़  
में वित्तमुर्ति के उत्तर पर था। मठिनवगुप्तने उत्तरालैक भेंडमका भविमुर्ति बनवाया किया  
थे। मठिनवगुप्तने यपते तीन पुभुक - कृष्णमैत्रेय, हुरव मैत्रेय उद्धरपृथुचिल्लविवर्ति  
विभक्तिनी भेंडन गंधों के रमनाकाल का उल्लाप किया थे। उत्तरमार उनका भवय  
७५० (950) रु. में लैकर ००३५ (1025) उक्त भावा एवं भक्तु थे।

कृतियां

मुमारु मठिनवगुप्तने भाद्रितुक एवं धार्मिक विद्यार्थों में मंत्रित शब्दों का  
रमना किया। उत्तरालैक कुल ४४ (44) गंधों की रमना की थी, स्त्रिमें में उक्तमार्गी  
रमनाएं यज्ञ नहूं के गाँव थे। उनके कृतियों के द्वारा छाँगे भेंडाएं एवं भक्तु थे।

### यमुमारु मठिनवगुप्त की कृतियां

उत्तर	धार्म
उत्तरालैक / उत्तरमार / उत्तरास्त्र उत्तराधिका / पद्मुपक्षमिका भालिनी विद्य वाहिक / पराद्विमिका विवरण लभ्वी प्रक्रिया / परभाद्वामार / पराद्विमिका लप्तवृत्ति कृष्णकलि / द्वीभैत्रविवरण / रक्षुपक्षमिका	रम्प्रपृथुचिल्लविवर्ति विभक्तिनी / कषामाप उलक हुरवार विवरण / मिवद्वृत्तालैक परभाद्वामाचा / पूर्वीलक विवरण हगवझीउत्तरामेत्तर्गु / द्वैपक्षमिका परभाद्वामेनिलक एका
मैत्रेय मनुष्व निवेदन / मनुकुरहिका मैत्रेय कृष्णमैत्रेय / हुरवभूव परभाद्वामिका / भैपद्म विमिका रक्षुपद्मवउपामक मैत्रेय / मिवमकुविनामाचाव मैत्रेय	कारुमामूर्ति मठिनवशारात्रि शत्रुलैक लैक कारुकेतुक विवरण भैकर्दूरकुलकविवर्ति



By Kishni Pandita

# कम्पीर / कश्मीर

**मे**रा रिश्ता कश्मीर से ऐसा ही है जैसा मां-बेटी का यह  
रिश्ता ना तो मां भूल पाती है ना ही बेटी। दोनों में से  
एक भी दूर चला जाये तो सहन नहीं होता। तो फिर ऐसा  
क्या हुआ कि इस मां ने हमें

अपने से ही नहीं कई अपनों से भी दूर कर दिया।

तब से मैं इन्हीं प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने की कोशिश कर रही हूँ।  
मन में यह एक कसक है जिसका तब तक मलाल रहेगा जब  
तक कि इस समस्या का हल नहीं निकलता। तब तक मैं इस  
मां की याद में लिखती रहूँगी।

एक प्रश्न?

उजाड़ वीरान धरों से रुआंसी आवाजें आती हैं।

वह खुशियों भरे दिन, वह जगमगाती रातें कब आयेंगी?

गिरती दीवारें, धंसते फर्श अभी भी पूछते हैं।

हमसे नाता तोड़ कर जाने वाले कब आयेंगे?

चरमराती सीढ़ियां, लटकती खिड़कियां अपनी दुर्दशा पर

आंसू बहाती हैं।

वह दनदनाती हुई बच्चों की फौज कब आयेगी?

बंद अलसाये हुए किवाड़ों से भी सदायें आती हैं।

हमें प्यार से थपथपाने वाले वापस क्यों नहीं आयेंगे?

कहां गया वह शोणगुल, वह कुलांचे मारते बच्चे?

उदास, उजाड़, सुनसान आंगन आजतक आंसू बहाता है।

वह ठोकुर कुठ जो घर का केंद्र बिंदु हुआ करता था।

आज भी अपने मुडे तुडे चिंतों को भीगी आंखों से देखता है।

वह मेरा शिवलिंग, वह मेरी धंटी, मेरा शंख, मेरा चंदन

क्या कोई मुझे यह सब वापस दिलायेगा?

घर के दरवाजे की जंग लगी टूटी सांकल भी पूछती है।

वह मेरे परिवार वाले क्या कभी वापस आयेंगे?

परित्यागी, सहमे, चिंतित, थके मादे मंदिरों के घाट पूछते हैं।  
यहां पर व्यथ त्रयोदशी पर दिये बहाने वाले और फूल चढ़ाने  
वाले कब आयेंगे?

शिवालय की धूल धूसरित धंटी कितने दिन से चुप है।

खुद से ही पूछती है मुझे बजाने क्या कभी आयेंगे?

हम सब भी तो अपने आप से और एक दूसरे से यहीं पूछते  
हैं।

कि आखिर हम लोग अपने धरों में वापस कब जायेंगे?

शायद कभी ऐसा कोई युग पुरुष अवश्य आयेगा।

जो कश्यप ऋषि की संतानों को फिर से अपनी जगह पर  
बसायेगा।

**भ**रि मुरा कम्पीर मेरिमा छी कै लैमा भां-रैरी का।  
वह रिमु न तै भां छुल पांडी कै न छी रैरी।

ऐं में मेरि एक छी छ्र एला एचै तै भक्त नक्की कैउ तै  
द्विर रिमा गु छम कि उम भां तै दृभं

मृप्ते मेरी नक्की करैम्पर्तै मेरी छ्र छ्र कर मिया।

उम मैं भै उम्मीं पूर्वे के उद्ग्र द्वंद्वे की केमिम कर रक्षी  
क्की भन में वह एक कमक कै ल्लिमका उम उक भलाल  
एक्केगा एव उक कि उम भभमू का छल नक्की निकलउ।  
उम उक भै उम भां की वार्द में लियडी रक्कंगी।

एक प्रश्न?

उस्त वीरान भर्ते मेरुम्भी मुवालै मुडी कै।

वह एप्सियैं छर्ते मिन, वह एगभगाडी रातै कर मुचंगी?

गिरडी दीवारै, एमउ दृज्ज मरी छी पूक्तै कै।

कभमे नातै तैउ कर एव रालै कर मुचंगी?

एरभगाडी भीम्भियां, लएकडी गिप्पूकियां मृप्ती द्वर्मा  
पर मुम्भु रक्काडी कै।

वह एन्द्रनाडी छर्ते रस्ते की द्वै ए कर मुचंगी?

एं यलभावै फार किवाड़े मेरी भद्वांच मुडी कै।

दृभं पूर मेरप्पर्पातै वालै वाप्त मैं नक्की मुचंगी?

कक्कं गया वह मेरगुल, वह कुलांगै भारउ रस्ते?

उम्म, उस्त, मुनभान मुंगन मुल्लुक मुमुरदातै कै।

वह टैकुर कु० ऐ भर का कंद्द गिंद्द फमु करउ घा

मुल्ल छी मृप्ते भुक्ते तुक्ते गिंडे के सीगी मुंपे मेरोपउ कै।

वह भेरा मिवलिंग, वह भेरी धंटी, भेरा माप, भेरा गंदन

गु कैरै भुक्ते वह भर वाप्त मिलावैगा?

भर के एवरालै की एंग लगी एरी भांकल छी पूक्तै कै

वह भेरा परिवार वालै गु कैरी वाप्त मुचंगी?

परिगुगी, भक्ते, गिंडित, घुक्ते भांटे भंटिर्ते के भाए  
पूक्तै कै।

यक्कं पर वृष उधेट्टमी पर मिये रक्कातै वालै उर द्रल  
एक्कातै वालै कर मुचंगी?

मिवलिंग की एल एमरित धंटी किउतै मिन मेरपै कै

एंग मेरी पूक्तै कै भुक्ते एव तुक्ते गु कैरी मुचंगी?

कभमर छी तै मृप्ते मुप्ते मेरु एक द्वमर मेरपै कैरी पूक्तै

कि मुमीपर कभलैग मृप्ते भर्ते मेरपै वाप्त कर एवंगी?

मायद कैरी रिमा कैरै वुग पूष्प यवमृ मुचंगी।

ऐ कमूप ट्रिष की भंडार्ते के द्विर मेरपै मृप्ती एगु वाप्त

रभावैगा।



By Kusum Warikoo

## ਕੌਰ ਮਪਨ ਮਾ

**ਏਂਝੀ ਕਾ ਏਰਵਾਰ ਪੀਂਹ ਕਰ ਲੈਮੇ ਕੀ ਮੈਨ ਪੰਾਰ ਮਜ਼ੂਰ**  
**ਗਾਪਾ , ਕਈ ਰਨ ਹੈ ਤੁਮ ਕੀ ਸੁਵਾਣ ਸੁਗੋ ਪਤਾ ਤੈ**  
**ਲਿਆ ਟਿਚਾ ਹੈ ਮੈਨ ਦੁਮਹਾ ਪੰਾਰ ਮਜ਼ੂਰ ਪੀਂਹ ਤੈ ਫਾਰ ਕਫਾ।**  
**‘ਨਹੀਂ ਸੁਧਾ’ ਵਕਤੋਲਾ ਤੈ ਮੈਨ ਪਤਾ ਲਿਆ ਟਿਚਾ। ਰਮ ਜੁਨਾ**  
**ਮਾ ਵਾਹੁਲਾਅ ਫਸੁ ਥਾ ਫਭਾਰੇ ਗੀਗ। ‘ਦੂਜਾ ਠੱਗ ਤੈ ਨਹੀਂ ਹੈ।**  
**ਸੁਹੀਪਰੀ ਗਰ ਤੁਮਨੇ ਪੁਛ ਤੈ ਮੈਨੋਲੀ ‘ਨਹੀਂ ਹੀਕ ਹੈ। ਤੁਮਕੇ ਗਾ**  
**ਏਕ ਨ ਏਣੇ ਵਾਲੀ ਮੁਕੁਨ ਮੇਂ ਰੂਗੀ ਆਮੈਸੀ। ਲੁਕਾ ਲਗਤੇ ਹੈ**  
**ਵੁਕਲੋਗ ਭੁਗ੍ਹ ਸੈ ਮਦਰ ਮੇਂ ਮੇਰੀ ਧੁਖੀ ਤੇਉਕੇ ਕੀ ਕੇਸਿਮ ਕਹਾਂ**  
**ਹੈ। ਮੈਨ ਸੁਪਨੀ ਪੀਠ ਮੇਂ ਏਕ ਕਾ ਕਹਾ ਕਰ ਸੁਧਾਂ ਮੁੜ ਲੀ। ਮੇਰ**  
**ਸੁਗੋ-ਪੇਚ ਮੇਂ ਕਾਥਾ ਗਾਂਗੁਲੀ ਕੀ ਸੁਵਾਣ ਮਜ਼ੂਰੀ ਕੀ ਮੁਚਕਰੀ ਪ੍ਰਾਪ**  
**ਮੀ ਕਨ ਕਨ ਕਰ ਮੇਰੀ ਨਮ ਨਮ ਮੇਂ ਪਿਖਲ ਰਕੀ ਥੀ..... ਫੁਲ**  
**ਗਰਮਾਤ ਫਸੁ .....।**

ਗੁਣੂ ਸੁਧਿ ਮੇਂ ਸੀ ਪਤਾ ਲਗ ਰਹਾ ਥਾ ਕਿ ਰੱਗਲੋਗ ਕੀ ਮਹਿਕੇ ਸੁਰ  
 ਕਾਢੀ ਪਾਗਰ ਨੇ ਏਕੀ ਹੈ। ਲਿੰਡਲ ਨੇ ਏਂਝੋਪੇਥੀ ਮੰਦਰ ਕੇ ਗੇਏ  
 ਪਰ ਹੀਭੀ ਗਤਿ ਮੇਂ ਗਾਡੀ ਰਕੀ ਤੈ ਮੈਨ ਹੈਂਗ ਮਭੂਲਾ ਨੀਂਹੇ ਸੁਕਰ  
 ਤੁਮੇ ਪੈਮ ਟਿਚਾ। ਤੁਮ ਮੇਂ ਸੁਪਨਾ ਮੁਏਕੇਮ ਲਿਆ ਇਹ ਸੁਗੋ ਗੁਰੂ  
 ਗੁਹਾਂ। ਪਾਨੀ ਪੀਨੇ ਕੋ ਲਿਆ ਰੈਤੁਲ ਟੋਏਂਹੀ ਤੈ ਪਤਾ ਹਾਲਾ ਕਿ ਏਂਝੀ ਮੇਂ  
 ਹੁਲ ਸੁਗੋ ਥੀ। ਪੀਕੋ ਟੋਏਂਹਾ ਤੈ ਵਕਲ ਧੁਕਾ ਥਾ। ਰੱਤਨੀ ਥੀ  
 ਕਿ ਰਫਤ ਪੋਰਮਾਨੀ ਨੋਗੀ। ਨਿਰ ਬਾਟ ਸੁਧਾ ਕਿ ਏਂਝੀ ਮੇਂ ਪਾਨੀ  
 ਪੀ ਕਰ ਮਾਮੈਨੇ ਕੀ ਮੀਏ ਕੋ ਲੁਕਾ ਮੇਂ ਰਾਧੀ ਥੀ।

ਮਾਗ ਟਿਨ ਕਾਢੀ ਰੂਮੁ ਰਕੀ। ਮਾਮ ਕੇ ਮਭਿ ਮਿਲਾ ਤੈ ਟੋਏਂਹਾ  
 ਏਕ ਏਮ ਏਭਾਏ ਮੁਹਾ ਹੈ। ਸੀਕਾਰੁ ਵੀ ਏਮ ਨੇ ਲਿਆ ਥਾ।  
 ਲਿਆ ਥਾ ਕਿ ਵਕਲ ਭੁਗ੍ਹ ਏਂਝੀ ਮੈਂਮੜਾ ਤੁਕ ਲਾਥਾ ਥਾ ਇਹ  
 ਰਫਤ ਹੀ ਧੁਸ ਥਾ ਕਿ ਮੈਂ ਸੁਪਨੀ ਰੈਤੁਲ ਗਾਡੀ ਮੇਂ ਹੁਲ ਸੁਗੋ ਕੁਝ।  
 ਪਤਤੇ ਹੀ ਭੁਗ੍ਹ ਗੁਮ੍ਮੇ ਇਹ ਰੰਭੀ ਟੈਂਹੈਂ ਕਾ ਏਕਮਾਮ ਮਾਥ ਮੇਂ  
 ਮਭਮੁਮ ਫਸੁ। ਸੁਗੋ ਲਿਆ ਥਾ ਕਿ ਲੁਕਾ ਮੈਂ ਦੁਗਾ ਏਂਝੀ ਕਾ  
 ਬਕੀ ਟੋਏਂਹ ਮੁਖਾਲ ਕਿੰਗੀ ਤੈ ਪਾਂਹੁੰਗੀ ਕਿ ਤੁਮ ਮੇਂ 30 ਰੁਪਘੇ  
 ਸ਼ੰਭਾ ਹੈ। ਵਕਲ ਤੁਮਨੇ ਤੁਮ ਪਾਨੀ ਕੀ ਰੈਤੁਲ ਕੇ ਰਾਲੇ ਮੇਂ ਸ਼ੰਭਾ  
 ਕਿਾ ਹੈ। ਇਹ ਰੈਤੁਲ ਰਾਪ ਲੀ ਹੈ। ਮੇਰੀ ਹੈਂਕੇ ਤੁਹਾਂ ਗੁਹਾਂ ਮੁਹੂਰਤ  
 - ਮੇਰੀ ਰਾਡਰਾਂ ਨੁਹਰ ਗਾਂਹੀ ਜਗਰਤ ਪੇ ਗੁਹਾਂ ਤੈ ਲਗਾ ਵਕਲ ਤੈ

### ਕੋਈ ਅਪਨਾ ਸਾ

**ਏਂਕਸੀ ਕਾ ਦਰਵਾਜਾ ਖੰਚ ਕਰ ਜੈਸੇ ਹੀ ਮੈਨੇ ਪਾਂਚ ਅਨਦਰ ਰਖਾ , ਕਹਾਂ ਜਾਨਾ ਹੈ।** ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਆਵਾਜ  
**ਅਈ। ਪਤਾ ਤੋ ਲਿਖ ਦਿਯਾ ਹੈ।** ਮੈਨੇ ਦੂਸਰਾ ਪਾਂਚ ਅਨਦਰ ਖੰਚੇ ਹੋਏ ਕਹਾ। ‘ਨਹੀਂ ਆਧਾ’ ਵਹ  
 ਬੋਲਾ ਗੇ ਮੈਨੇ ਪਤਾ ਲਿਖਾ ਦਿਯਾ। ਬਸ ਇਤਨਾ ਸਾ ਵਾਰਤਾਲਾਪ ਹੁਆ ਥਾ ਹਮਾਰੇ ਬੀਚਾ। ‘ਯਾਦਾ ਠੰਡਾ ਤੋ  
 ਨਹੀਂ ਹੈ।’ ਆਖਿਰੀ ਬਾਰ ਤੁਸੇ ਪ੍ਰਭਾ ਤੋ ਮੈਂ ਬੋਲੀ ‘ਨਹੀਂ ਠੀਕ ਹੈ।’ ਤੁਸਕੇ ਬਾਦ ਏਕ ਨ ਟੂਟਨੇ ਵਾਲੀ ਸੁਕੂਨ  
 ਸੇ ਭੀ ਖਾਮੀਸ਼ੀ। ਜਹਰ ਲਗਤੇ ਹੈਂ ਵਹ ਲੋਗ ਸੁਝੇ ਜੋ ਸਫਰ ਮੇਂ ਮੇਰੀ ਚੁਪੀ ਤੋਡਨੇ ਕੀ ਕੌਂਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਤੇ ਹੈਂ।  
 ਮੈਨੇ ਅਪਨੀ ਪੀਠ ਸੀਟ ਸੇ ਟਿਕਾ ਕਰ ਆਂਖੋਂ ਮੂੰਦ ਲੀ। ਮੇਰੀ ਅਈ-ਪੋਡ ਸੇ ਭਾਧਾ ਗਾਂਗੁਲੀ ਕੀ ਆਵਾਜ ਸੰਦੀ  
 ਕੀ ਸੁਨਹੀ ਧੂ ਸੀ ਛਨ ਛਨ ਕਰ ਮੇਰੀ ਨਸ ਨਸ ਮੇਂ ਪਿਖਲ ਰਹੀ ਥੀ..... ਫੂਲ ਬਰਸਾਤਾ ਹੁਆ .....

ਬਨਦ ਆਂਖਾਂ ਸੇ ਭੀ ਪਤਾ ਲਗ ਰਹਾ ਥਾ ਕਿ ਬੇਂਗਲੋਰ ਕੀ ਸਡਕੋਂ ਅਥ ਕਾਫੀ ਖਰਾਬ ਹੋ ਚੁਕੀ ਹੈਂ। ਜਿਦਲ  
 ਨੇਚੋਰੋਪੈਥੀ ਸੈਂਟਰ ਕੇ ਗੇਟ ਪਰ ਧੀਮੀ ਗਤਿ ਸੇ ਗਾਡੀ ਰੂਕੀ ਤੋ ਮੈਨੇ ਬੈਗ ਸਥਭਾਲ ਨੀਚੇ ਆਕਰ ਤੁਸੇ ਪੈਸੇ  
 ਵਿਧੇ। ਤੁਸੇ ਅਪਨਾ ਸੂਟੋਕੇਸ਼ ਲਿਆ ਔਰ ਆਗੇ ਬੜ ਗੈਂਡ।

ਪਾਨੀ ਪੀਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਬੋਤਲ ਦੇਖੀ ਤੋ ਪਤਾ ਚਲਾ ਕਿ ਟੇਕਸੀ ਮੇਂ ਭੂਲ ਆਈ ਥੀ। ਪੀਛੇ ਦੇਖਾ ਤੋ ਵਹ  
 ਨਿਕਲ ਚੁਕਾ ਥਾ। ਜਾਨਨੀ ਥੀ ਕਿ ਬਹੁਤ ਪੇਰੇਸ਼ਾਨੀ ਹੋਗੀ। ਫਿਰ ਧਾਦ ਆਧਾ ਕਿ ਟੇਕਸੀ ਮੇਂ ਪਾਨੀ ਪੀ ਕਰ  
 ਸਾਮੇਨੇ ਕੀ ਸੀਟ ਕੇ ਜੇਕੱਟ ਮੇਂ ਰਖੀ ਥੀ।

ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਕਾਫੀ ਵਾਲਾ ਥਾ। ਸਾਮ ਕੇ ਸਮਾਂ ਮਿਲਾ ਤੋ ਦੇਖਾ ਏਕ ਏਸ ਏਸ ਏਸ ਆਧਾ ਹੈ। ਸ਼੍ਰੀਕਾਨਤ  
 ਵੀ ਏਸ ਨੇ ਲਿਖਾ ਥਾ। ਲਿਖਾ ਥਾ ਕਿ ਵਹ ਮੁੜੇ ਟੇਕਸੀ ਮੇਂ ਸੇਨਟਰ ਤਕ ਲਾਯਾ ਥਾ ਔਰ ਬਹੁਤ ਹੀ ਖੁਸ਼ ਥਾ  
 ਕਿ ਮੈਂ ਅਪਨੀ ਬੋਤਲ ਗਾਡੀ ਮੇਂ ਭੂਲ ਆਈ ਹੂੰ। ਫਡੇ ਹੀ ਮੁੜੇ ਗੁਸ੍ਸੇ ਔਰ ਹੱਸੀ ਦੀਨੋਂ ਕਾ ਏਹਸਾਸ ਸਾਥ ਮੇਂ  
 ਮਹਸੂਸ ਹੁਆ। ਆਗੇ ਲਿਖਾ ਥਾ ਕਿ ਜਬ ਮੈਂ ਦੁਬਾਰਾ ਟੇਕਸੀ ਕਾ ਯਹੀ ਏਪ ਇਸ਼ਤੇਮਾਲ ਕਰਨੀ ਤੋ ਪਾਂਤੀਗੀ  
 ਕਿ ਤੁਸੇ ਮੇਂ 20 ਰੁਪਘੇ ਜਮਾ ਹੈ। ਵਹ ਤੁਸੇ ਇਸ ਪਾਨੀ ਕੀ ਬੋਤਲ ਕੇ ਬਦਲੇ ਮੇਂ ਜਮਾ ਕਿਏ ਹੈਂ ਔਰ ਬੋਤਲ  
 ਰਖ ਲੀ ਹੈ। ਮੇਰੀ ਭੋਹੇਂ ਤਨ ਗੈਂਡ ਕਿਾ ਮਤਲਬ - ਮੇਰੀ ਹੱਡਬਡਾਈ ਨਜ਼ਰ ਬਾਕੀ ਇਬਾਰਤ ਪੇ ਗੈਂਡ ਤੋ ਲਗਾ ਯਹ

ਪ੍ਰਗੀ ਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਸੁਰ ਮੇਰੀ ਲਿੰਡਮਾ ਇਹ ਰਾਹ ਹੈ। ਮੈਨ ਏਕ ਹੀ  
 ਮਾਮ ਮੈਂ ਪੁਗ ਪਾਹ ਗਲਾ। ਤੁਮ ਕਾ ਕਲਨ ਥਾ ਕਿ ਰਫਤ ਟਿੱਚੇ ਮੈ  
 ਰੈਤੁਲ ਪੰਜਾਨਾ ਹਾਹ ਰਹ ਥਾ ਕਾਰਾਂ। ਤੁਮ ਕੀ ਨਿਧਾਕਿਵਾਂ  
 ਤੁਮੇ ਪਾਨਾ ਪਾਹ ਤੈ ਫਾਰ ਸੁਡੀ ਹੈ। ਇਹ ਮਿਨ੍ਹ ਪਾਨੀ ਪੀਨੇ ਪਰ ਹੀ  
 ਥਭਤੀ ਹੈ। ਰੂਪਾਤਾ ਮਭਿ ਵਕਲ ਏਂਝੀ ਪਰ ਕੈਤੁ ਹੈ ਵਕਲ ਤੈ ਤੁਮੇ ਤੁਮੇ  
 ਪਾਨੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਤਾ।

ਇਹ ਸੈਂਤੋਲ ਤੁਮੇ ਪਮੰਦ ਸੁਡੀ ਵਕਲ ਮਹਿਗੀ ਕੈਤੀ ਹੈ। ਟੋਮਾ ਹੀ  
 ਨਹੀਂ ਥਾ ਕਿ ਲੋਗ ਰੈਤੁਲ ਰੁਲਤੇ ਨ ਹੋ ਲੈਕਿਨ ਵਕਲ ਪਲਾਮ੍ਹਿਕ  
 ਕੀ ਕੈਤੀ ਥੀ, ਰੂਪਾਤਾ ਰੇਤੋ ਜਮੁਭਾਲ ਨਹੀਂ ਕਾ ਮਕਤੇ, ਮੋਹਤ ਕੋ  
 ਲਿਆ ਫਾਨੀਕਾਰ ਕੈ ਵਕਲ ਵਕਲ ਮਹ ਰਨਤੁ ਥਾ। ਵਿਟੋਸੀ ਸ਼ੁਦੀ  
 ਮਹਿਗੀ ਰੈਤੁਲ ਹੀ ਹੁਲ ਰਤੁ ਹੈ ਲੈਕਿਨ ਵਕਲ ਤੁਹੈਂ ਫਾਰ ਤੁਹੈਂ ਲਗ ਤੁਹੈਂ  
 ਲਗਾਤੁ। ਕਾਰਾਂ ਵਕਲ ਕਿ ਏਕ ਤੈ ਵਕਲ ਲੋਗ ਰੈਤੁਲ ਮੈਂ ਭੁਲ ਲਗਾ  
 ਕਾ ਪਾਨੀ ਪੀਤੁ ਹੈ ਦੁਮਾ ਹੂੰ ਰਤੇ ਕੇਨ ਗੀਭਾਰੀ ਲਗੀ ਹੈ। ਮੇਰੀ  
 ਰੈਤੁਲ ਬੁਨ ਰਾਪਨੇ ਕਾ ਕਾਰਾਂ ਥਾ ਕਿ ਤੁਮੇ ਟੋਪਾ ਪਾਨਾ ਥਾ ਕਿ ਮੈਨ  
 ਪਾਨੀ ਭੁਲ ਲਗਾ ਕਾ ਨਹੀਂ ਗੁਕ੍ਕਿ ਤੁਪਰ ਮੇ ਪਿਥਾ ਥਾ। ਹਿੰਦੀ  
 ਸੁਧੀ ਇਹ ਹੀ ਗਾਂਹੀ ਥੀ ਲਿਆ ਥਾ ਕਿ ਵਕਲ ਰਨਤੁ ਹੈ ਰੈਤੁਲ  
 ਮਹਿਗੀ ਹੈ ਲੈਕਿਨ 20 ਰੁਪਘੇ ਤੀਕ ਹੈ। ਏਕ ਤੈ ਵਕਲ ਮੋਹਤ ਕੈਤੁ,  
 ਹੈ ਇਹ ਤੁਮੇ ਪਾਨਾ ਕਾਰਾਂ ਕਿ ਰੈਤੁਲ ਕੋ ਲਿਆ ਤੁਮ ਕਾ ਜੁਤਾ  
 ਹੀ ਰਸਾਂ ਹੈ।

ਸੁਹੀਪਗ ਮੇਂ ਏਕ ਕਿਟਾਵਤ ਹੀ ਹੈ। ਕਈ ਦੁਮੰਹੋਂ ਕੇ ਸੁਪ ਮੋ  
 ਰੂਪਾ ਸ਼ੁਰੂਰਤ ਕੈਤੀ ਹੈ ਤੁਮਲਿਆ ਕੇਂਹ ਸੀਲ ਪਿੱਚੇ ਪੇ ਮਾਂਪਾਂ ਨਹੀਂ  
 ਕੈਨ ਹਾਲਿਆ। ਏਕ ਮਲੀਂ ਮੀ ਭਮੁਹਾਫਾ ਦੇਂਹ ਗੁਹੋ ਮੇਰੀ  
 ਕੈਤੀ ਪਾ। ਮੇਂ ਤੁਮ ਕਾ ਹੋਲਾ ਵਾਟ ਕਰਨੇ ਕੀ ਕੇਸਿਮ ਕਰਨੇ  
 ਲਗੀ। ਵਾਟ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸੁਧਾ ਟੈਂਕੀ ਮੈਨੋਲੈ ਟੋਪਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਥਾ  
 ਰਮ ਕੇਵਲ ਸੁਵਾਣ ਕੇ ਰੂਪਾਰ ਟੈਂਕੀ ਰਨੀ ਮੈਂਹੈ ਸੁਪਨੇ ਸੁਪ ਮੇਂ ਹੀ  
 ਮਹ ਰਨੀ। ਏਕ ਇਹ ਜੁਕਨ ਏਂ ਮੋ ਮਾਥ ਦੇਂਹ ਏਂ ਰਨ ਏਕ ਪਲ  
 ਹੀ ਤੁਮੇ ਸੁਧਾ ਤੁਮ ਕਾ ਨਹੀਂ ਟੋਪਾ ਮੈਨੋ। ਸੁਹੀਪਗ ਮੈਂ ਜੁਤਾ  
 ਰੂਮੁ ਕਿਮ ਗਾਤ ਮੇਂ ਹੀ ਹੈ?? ਮੁਹੂ ਨਹੀਂ ਪਹਾਨਤੀ ਲੈਕਿਨ ਸੁਰ ਤੁਮੇ  
 ਰਫਤ ਸੁਦੀ ਤੁਰਫ ਮੇਂ ਸਨ ਗੁਹੋ ਥੀ। ਕੇਂਹ ਤੈ ਸੁਪਨਾ ਮਾ ਥਾ।

ਔਰ ਜੋ ਬੋਤਲ ਤੁਸੇ ਪਸੰਦ ਆਤੀ ਵਹ ਮਹਾਂਗੀ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਏਸਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਥਾ ਕਿ ਲੋਗ ਬੋਤਲ ਭੂਲਤੇ  
 ਨ ਥੇ ਲੇਕਿਨ ਵਹ ਪਲਾਸਟਿਕ ਕੀ ਹੋਤੀ ਥੀ, ਜਾਦਾ ਦੇਰ ਇਸਤੇਮਾਲ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ, ਸੇਵਤ ਕੇ ਲਿਏ  
 ਹਾਨੀਕਾਰਕ ਹੈ ਵਹ ਯਹ ਸਬ ਜਾਨਤਾ ਥਾ। ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਅਚੜੀ ਮਹਾਂਗੀ ਬੋਤਲ ਭੀ ਭੂਲ ਜਾਤੇ ਹਨ ਲੇਕਿਨ ਵਹ  
 ਤੁਹੈਂ ਹਾਥ ਤਕ ਨਹੀਂ ਲਗਾਤਾ। ਕਾਰਣ ਯਹ ਕਿ ਏਕ ਤੋ ਵਹ ਲੋਗ ਬੋਤਲ ਸੇ ਸੂਹ ਲਗਾ ਕਰ ਪਾਨੀ ਪੀਤੇ  
 ਹੈਂ ਦੂਸਰਾ ਕਿਵਾ ਜਾਨੇ ਕੋਨ ਬੀਮਾਰੀ ਲਗੀ ਹੈ। ਮੇਰੀ ਬੋਤਲ ਯੂੰ ਰਖਨੇ ਕਾ ਕਾਰਣ ਥਾ ਕਿ ਤੁਸੇ ਦੇਖਾ ਥਾ  
 ਕਿ ਮੈਨੇ ਪਾਨੀ ਸੂਹ ਲਗਾ ਕਰ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਤੁਪਰ ਸੇ ਪਿਥਾ ਥਾ। ਚਿੰਨ੍ਹੀ ਅਭੀ ਓਰ ਥੀ ਬਾਕੀ ਥੀ ਲਿਖਾ ਥਾ  
 ਕਿ ਵਹ ਜਾਨਤਾ ਹੈ ਬੋਤਲ ਮਹਾਂਗੀ ਹੈ ਲੇਕਿਨ 20 ਰੁਪਘੇ ਠੀਕ ਹੈ। ਏਕ ਤੋ ਯਹ ਸੇਕਨਡ ਹੇਨਡ ਹੈ ਔਰ ਤੁਸੇ  
 ਸੇ ਬੜਾ ਕਾਰਣ ਕਿ ਬੋਤਲ ਕੇ ਲਿਏ ਤੁਸੇ ਕਾ ਇਤਨਾ ਹੀ ਬਜਟ ਹੈ।

ਆਖਿਰ ਮੇਂ ਏਕ ਹਿਦਾਯਤ ਥੀ ਵੀ ਹੈ। ਕਥੀ ਦੂਸਰੋਂ ਕੋ ਆਪ ਸੇ ਜਾਦਾ ਜ਼ਰੂਰ ਹੋਤੀ ਹੈ ਇਸਲਾਇ ਕੋਈ  
 ਚੀਜ਼ ਖੋਨੇ ਪੇ ਦੁਖੀ ਨਹੀਂ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਏ।” ਏਕ ਅਜੀਬ ਸੀ ਸੁਸਕਾਰਾਹਟ ਵੀਡ ਗੈਂਡ ਮੈਂਹੋਂਠੋਂ ਪਾ ਮੇਂ ਤੁਸੇ  
 ਕਾ ਚੇਹਰਾ ਧਾਵ ਕਰਨੇ ਕੀ ਕੋਂਥਿਸ਼ ਕਰਨੇ ਲਗਾ। ਧਾਵ ਹੀ ਨਹੀਂ ਆਧਾ ਕਿਂਚੋਕ ਮੈਨੇ ਤੋ ਦੇਖਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਥਾ  
 ਬਸ ਕੇਵਲ ਆਵਾਜਾ ਕੋ ਜਵਾਬ ਦੇਤੀ ਰਹੀ। ਮੈਂ ਤੋ ਅਪਨੇ ਆਪ ਮੈਂ ਹੀ ਮਨ ਰਹੀ। ਏਕ ਔਰ ਇਸਾਨ ਜੋ  
 ਮੈਂ ਸਾਥ ਦੀ ਘੋੜੇ ਰਹੇ ਹਨ ਏਕ ਪਲ ਭੀ ਤੁਸੇ ਆਂਖ ਤਡਾ ਕਰ ਨਹੀਂ ਦੇਖਾ ਮੈਨੋ। ਆਖਿਰ ਮੈਂ ਇਤਨਾ ਵਾਲਾ ਕਿਸ  
 ਬਾਤ ਮੈਂ ਥੀ?? ਸਾਕਲ ਨਹੀਂ ਪਹਚਾਨਤੀ ਲੇਕਿਨ ਅਥ ਤੁਸੇ ਬਹੁਤ ਅਚੜੀ ਤਰਹ ਸੇ ਜਾਨ ਗੈਂਡ ਥੀ। ਕੋਈ ਤੋ  
 ਅਪਨਾ ਸਾ ਥਾ।



By A.K. Razdan

## म्हार्मी परभानन् स्त्री / स्वामी परमानन्द जी

**प**रभानन् स्त्री की कमभीरी छापा भैं लियी कविताएँ मुझ्हें का रक्षण का रक्षण में है एवं वौपरी का पारभिक मिश्र यपते पिता पं० कुक्ष पर्वत में पापु की गाँव में रहना उर्जैने यपती परभानन् का थी ५०८ - ५०९ किया। यपते पिता की यक्षात्तेजांतु उर्जैने पर परभानन् स्त्री के परवारी के पर पर काम करना पड़ा। कुक्ष भभय के पक्षात्त परवारी काम टृग कर उनके पृथी उठ में योदी पर गुरुग करना पड़ा। यहिक पभय पाण्डा और चक्री भैं बृद्धीत करने लगे। परभू में उर्जैने द्वारी में कविता लियना मुझ किया, द्वारी की कविताएँ उर्जैने गरीब नाम में लियीं। उनकी द्वारी भैं रायित केंद्र थी कविता उपलब्ध नहीं है।

परभानन् स्त्री की भूमी कविताओं का भूर रक्षण की त्रैया है और यह एक मरु उन की मुष्टाद्विक काष्ठा का द्वैतुक है। द्वैरभाला एवं वैगाहाम उनके रस्ते में उन के ५०८-५०९ के रक्षण यन्त्रवें का छाम करते हैं। वभुः परभानन् स्त्री मी कुक्ष चक्र वे परनु वे यपती कविताओंमें रम्बुर के यह ध्रुप और यह रंग का गुण गौन करते द्विष्टार्ण द्वैत है। “राण मध्यवेत्र” और “मुद्राभा यारिइ” उनके कुक्ष चक्री के भूर नभूने हैं। “यभरनाघ वाइ”, “कद्मुभिका”, “यभर पार्वी” उनकी कुक्ष पापुत्त रायनाएँ हैं। परभानन् स्त्री की पड़ी कुक्ष यित्तिया ध्रुवाव की धीं एवं वह परभानन् स्त्री के भाष मध्ववद्वार में पेम युटी थी। उन के परभ मिधूलकृन गाल्लान से कि ध्रुव उम्म केटि के कवि वे और यपती रायनालकृन्तु वृलवृल के नाम में लियेते वे यपते गुरु परभानन् स्त्री के यपती पड़ी ध्रुव छार छार यपभानितु द्वैत द्वैत यपते द्वैती के कर द्वैत रक्षण। परभानन् स्त्री यपते मिधूलकृन्तु वृलवृल के यक्षभग्न कर युप करते हैं कि यह किमी के यपते यपते पारवृ कद्म का शुगउन करना है, उर्गी गुरुभाऊ यपता कद्म करती है भूर्ज और उभ के यपते कद्में का निवार युमी युमी करना ग्राहिण। येरी पड़ीपिकलै एन्द्र में गाव धी और भैं एक के भूष था। गाव के द्वभ पर एक भाव था लिम के भैं केवे के रुपमें गैंग में भांभ भैं युप रक्षण कर यह के उभ यपते युपके द्वैत द्वैती कर रहे हैं।

परभानन् स्त्री का द्वैत ०५१७ द्वैत में रहना उनकि भारी कविताओं का यंगैस्त्री यन्त्रवास भाष्ट्रस्त्रिन्द्रकेलस्त्री ने किया है से एन्द्र कास्त्रीर कलाप्ल एकेतभी ने पक्षमित किया है। परभानन् स्त्री की कविताओं के कुक्ष यंग...

यभर पार्वै द्वभ मंभार द्वया।  
युर्द्वै द्वैर रनुक ये यस्त्रिकार द्वया।  
द्वारव रेमुव रवभर उर द्वया।  
मउ वेग्मार, मउ वेग्मार।  
गैकुल रुद्य भैन, उडि गैन गुद्वान  
ये विभज्ज द्वीपिभान रगवान॥  
गटि भेल्लु गाम युव यानि स्लेन्या।  
एव एव एव द्वीवुकी ननुन्य॥  
करभुद्विका द्विल्लि द्वरभुक रल।  
मंत्रैम द्वृलि रवि युननु दल॥  
गिन्दुनार द्व लिन्दु (स्लैन) भशन।  
पानु रेमुव पान मंशन।  
भद्रल वेग्मार करन।

अमर पानो ब्रम संसार छुय।  
आदि देव बन्नुक चै अदिकार छुय।  
हारव रोस्तुय बवसर तार छुय।  
सत वेच्चार, सत वेच्चार।  
गोकुल हृदय म्योन, तति चोन गर्यवान  
चेथ विमर्श दीसिमान बगवान॥।  
गटि मंजु गाश आव चानि ज्ञेनय।  
जय जय जय दीवुकी नन्दनय॥।  
करमु बूमिका दिजि दरमुक बल।  
संतोश व्यालि बवि आनन्दु फल॥।  
गिन्दुनाह छु जिन्दु (ज्योन) मरुन।  
पानु रोस्तुय पान सॅरुन।  
संहज वेच्चार करुन।

# Core Sharada Team at Vishva Sarasavath Sang

ਕੇ ਸਾਰਹਾ ਈਮ ਕੇ ੩੧ ਨਵੰਬਰ ਕੇ ਮੈਂਗਲੋਰ ਮੰਯੁਥੇਲਿੰਡ  
ਪਾਰਥੁਥੋਂ ਕੇ ਵਿਸ਼ਵਰੂਪੀ ਕਾਟ੍ਰੂਮ ਕੇ ਪੰਗਮ ਕੇ ਫੈਰਾਨ  
ਫੈਲਚੇ ਕੇ ਲਿਆ ਯੁਭੇਤ੍ਰਿੰਡ ਕਿਧਾ ਗਧਾ ਘਾ।

ਕਾਟੁਕੁਮ ਕਾ ਸੁਵੇਣ ਵਿਸ਼ੁ ਪਾਰਖੁਥ ਮੰਖ (ਵੀਅਮਾਂਦ) ਸ਼ੁਆ  
 ਕਾਮੀ ਮੰਭੂਨ ਵਾਗਾਂ ਮੀ ਕੋ ਪਰਮ ਪਾਰਨ ਮੀ ਮਹਾਂ ਮਖੁਮਿਨ੍  
 ਤੀਜੂ ਖੁਆਭੀਈ ਕੋ ਭਾਜ਼ਟੁਚਨ ਮੇ ਕਿਧਾ ਗਥਾ ਥਾ। ਕੋਂਗ ਮਾਰੁਦ  
 ਈਮ ਕੋ ਪਦਮੁਗਾਕਸ ਕੌਲ, ਪਦਮੀ ਕਾਮੀਨਾਥ ਪੁਣਿਤ,  
 ਝੁੱ ਯਲਘ ਧੁੱਗੁ ਮੌਦਾਲੀ ਵੈਡੁ, ਸੁਰਤੀ ਈਕੂ, ਲੇਡਿਨੈਂ ਪ੍ਰੀਤਿ  
 ਮੈਨ, ਟਿੱਚੇਸ ਕਾਭਥ, ਗਾਕਸ ਕੌਲ ਇਹ ਮੁਣਕਰ ਹਾਂ  
 ਤੇਮ ਕਾਟੁਕੁਮ ਮੈਂ ਦਾਗ ਲੈਂਤੇ ਰਾਲੇ ਬਨੂ ਪਾਹੂਤ ਵਰੁਅਂ ਕੋ ਭਾਥ  
 ਤੁਪਮਿਤ ਵੇ।

ਥਕ ਨਾਲ ਕੇ ਟਿੱਚੋਂ ਮੇਂ ਮਨੁੱਸ਼ਪੁਰਲ ਮਜ਼ੂਲਾਂ ਵੇਂ ਮੇਂ ਮੇਂ ਏਕ ਥਾ ਲੋਕ  
ਛਿੰਦ੍ਹ ਮਾਰਖੁਥ ਤੀਰ ਤੇਜ਼ ਕਾਂਡਿਆਮ, ਕਸ਼ਮੀਰੀ ਪੱਛਿਉੰਕਾ  
ਪਲਾਵਨ ਤੀਰ ਮੀਂਧ ਗਾਰ ਪਾਂਠ, ਰਾਖੂ ਨਿਸ਼ਾਵੁੰਚੇ ਮੇਂ ਮਾਰਖੁਥੋਂ ਕੀ  
ਚੁਮਿਕਾ, ਮੰਘੂਤ - ਭਾਤੁਆਖਾ, ਸਾਰਟਾਂ ਲਿਪਿ, ਤੀਰ ਮਾਰਖੁਤ  
ਮੌਂ ਕੀ ਚੁਮਿਕਾ ਲੈਪ ਵਿਖਾ ਚੋਂ। ਮਾਰਖੁਤ ਏਕਤਾ ਪਰ ਵਿਖਾਰ ਮੇ  
ਹਾਚਾ ਕੀਂ ਰਾਗੀ। ਤੇ ਟੇਗਨ ਮਾਰਖੁਤ ਏਕਤਾ ਕੀ ਚੁਵਿਖੁ ਕੀ  
ਕਾਟ ਵੈਣਚਾ ਪਰ ਵਿਖਾਰ ਕਿਵਾ ਰਾਗੀ।

ਜੇ ਕਾਟੁਮ ਮੈਂ ਦਿਨਿਆ ਰਾ ਮੋ ਕਸੀਰੀ ਪਾਰਬੁਥ ਪੱਛਿਤ,  
ਮੈਨਵਾਲ ਪਾਰਬੁਥ, ਗਲ੍ਹਮਾਨ ਪਾਰਬੁਥ, ਗੈਂਡਾ ਪਾਰਬੁਥ  
ਗੁਫ਼ਾਂ, ਹਿੜਪੁਗ ਪਾਰਬੁਥ ਅਤੇ ਗੁੜਪੁਗ ਪਾਰਬੁਥ ਮਹਿਤ  
ਵਿਚਿਤ੍ਰ ਪਾਰਬੁਥ ਹਨਾਂ ਲੈਂਗ।

ਚਾਖਾਂ ਮੈਂ ਕੋਰ ਸਾਰਹਾ ਈਮਨੈ ਸਾਰਹਾ ਲਿਪਿ ਕੇ ਪੁਨਰਸ਼੍ਰਵ  
ਕੀ ਸੁਵਸੂਕਤਾ, ਸਾਰਖੁਣੈ ਕੇ ਲਿਆ ਅਮਕੀ ਪਾਮਣਿਕਤਾ ਤਾਰ  
ਪ੍ਰਿਕੂ ਪਰ ਕਾਭ ਕਰਨੈ ਕੇ ਲਿਆ ਸੁਵਸੂਕ ਮੰਧਰੁ ਪ੍ਰਥਾ ਮੈਂ ਪਰ  
ਏਂ ਦਿਵਾ। ਕਸੀਰ ਤਾਰ ਸੋਖ ਰਾਰਤ ਕੇ ਪਾਥ ਮੰਗੁੰਦੇ ਕਾ ਪਤੁ  
ਜਗਾਵੈ ਕੇ ਲਿਆ ਪਾਚੁਲਿਪਿਵੇਂ ਪਰ ਗਫਨ ਸੋਏ ਕੀ ਸੁਵਸੂਕਤਾ  
ਤੂ।

ਪ੍ਰਿਤੁ ਕੇ ਪੁਨਰਸ਼ੁਰ ਕੀ ਟਿੱਸਾ ਮੈਂ ਕੋਹ ਸਾਗਦਾ ਈਮ ਕੀ ਪ੍ਰਮੁਡਿ  
ਤੁਰ ਪ੍ਰਧਾ ਮੈਂ ਕੀ ਮਾਗਦਨਾ ਕੀ ਗੱਡੇ ਤੁਰ ਪਰਭ ਪਾਰਨ ਸੀਮੰਦ  
ਮੁਮੂਬਿਨ੍ਤੁ ਤੀਜੂ ਖਾਬੀਏ ਕੋ ਥੁਮੀਵਾਦ ਮੇ, ਈਮ ਕੇ ਕਾਟ ਸਾਲਾ  
ਮੈਂ ਕੋਹ ਸਾਗਦਾ ਈਮ ਕੇ ਕਾਭ ਕੇ ਤੁਰ ਯਣਿਕ ਵਿਵਰਾਂ ਮੈਂ ਪ੍ਰਮੁਦ  
ਕਰਨੇ ਕਾ ਸਰਭਰ ਟਿੱਥਾ ਗਥਾ ਪ੍ਰਲ੍ਲੇ ਮੈਂ ਪ੍ਰਸੀ ਰੋਨਿਕਾ ਪੀਅ  
ਤੇ ਸਾਗਦਾ ਲਿਪਿ ਤੁਰ ਤੁਮਕੇ ਭਲੜ੍ਹ ਪਰ ਪ੍ਰਮੁਡਿ ਈ ਤੁਰ ਖਾਬੀ  
ਏ ਕੇ ਪ੍ਰਕਾਸਿਤ ਪ੍ਰਤਿਬਹੀ ਪ੍ਰਸੁਕੇ ਹੋਏ ਕੀਂ।

को र शारदा टीम को 27 नवंबर को मैंगलोर में आयोजित सारस्वथों के विश्वव्यापी कार्यक्रम के संगम के दौरान बोलने के लिए आमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम का आयोजन विश्व सारस्वथ संघ (वीएसएफ) द्वारा काशी मठ संस्थान वाराणसी के परम पावन श्रीमद सम्यमिन्द्र तीर्थ स्वामीजी के मार्गदर्शन में किया गया था।

कोर शारदा टीम के सदस्य राकेश कौल, पद्मश्री काशीनाथ पंडिता, डॉ अजय चुगू, शेफाली वैद्य, आरती टीकू, लेफ्टिनेंट प्रीति मोहन, दिनेश कामथ, राकेश कौल और सुधाकर भट इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले अन्य प्रख्यात वक्ताओं के साथ उपस्थित थे।

यह हाल के दिनों में महत्वपूर्ण सम्मेलनों में से एक था जहां हिंदू सारस्वथ और उनका इतिहास, कश्मीरी पंडितों का पलायन और सीखे गए पाठ, राष्ट्र निर्माण में सारस्वतों की भूमिका, संस्कृत - मातृभाषा, शारदा लिपि, और सारस्वत मठों की भूमिका जैसे विषय थे। सारस्वत एकता पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इस दौरान सारस्वत एकता की भविष्य की कार्ययोजना पर विचार किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में दुनिया भर से कश्मीरी सारस्वथ पंडित, मोहयाल सारस्वथ, राजस्थान सारस्वथ, गौड़ा सारस्वथ ब्राह्मण, चित्रपुरा सारस्वथ और राजापुरा सारस्वथ सहित विभिन्न सारस्वत भाग लेंगे।

भाषण में, कोर शारदा टीम ने शारदा लिपि के पुनरुद्धार की आवश्यकता, सारस्वतों के लिए इसकी प्रासंगिकता और स्क्रिप्ट पर काम करने के लिए आवश्यक संयुक्त प्रयासों पर जोर दिया। कश्मीर और शेष भारत के साथ संबंधों का पता लगाने के लिए पांडिलिपियों पर गहन शोध की आवश्यकता है।

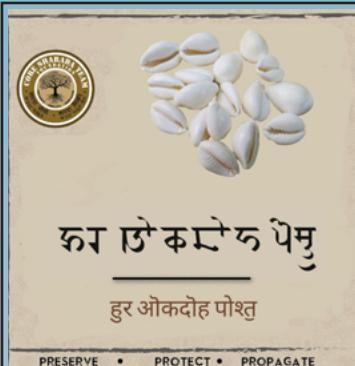
स्क्रिप्ट के पुनरुद्धार की दिशा में कोर शारदा टीम की प्रस्तुति और प्रयासों की सराहना की गई और परम पावन श्रीमद सम्यमिन्द्र तीर्थ स्वामीजी के आशीर्वाद से, टीम को कार्यशाला में कोर शारदा टीम के काम को और अधिक विवरण में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया। पुणे में सुश्री वेरोनिका पीर ने शारदा लिपि और उसके महत्व पर प्रस्तुति दी और स्वामी जी को प्रकाशित प्राइमरी पुस्तकें भेंट कीं।

मारुदा दिवस ३०३३ / Sharada Diwas 2022

के लिए मारदूर ईम कर्ग वर्त्ते में गोरी उत्तीर्णा द्विवेदी के  
मारदूर द्विवेदी के रुप में भना राजी है। यह वह वह की  
रुक्त भक्तिपूर्व खण्डनात् भेद एक है। उभे वह वह वह  
द्वारा वही ३०३३ के भना था गवा। मारदूर द्विवेदी भभारेन्द्र के  
द्वे राज के लिए मारदूर ईम ते मारदूर गण्डात् भभिति के भाष  
मंगोरी भ० का द्वे राज किया और मारदूर लिपि और मारदूर  
भौद्धि में भंगित परिवेशनात् के भीरात् सूर्य गोरी मंकर  
स्त्री के पुमुदु किया। उभे के यत्कावा के लिए मारदूर ईम ते एक  
यौवनलाभै काटकुम का युवेश्वन किया था एक सूर्य के रुक्त  
रामण्ड्मोपर ते पाचुलिपि विष्णु और उन परिवेशनात्  
पर एक पुमुति दी थी ऐन पर ऊभारी ईम काम कर  
राजी है। ऊभारे भीष्मपती भद्रमें के लिए एक विमेष  
युठितेन काटकुम दी था, ऐन मारदूर लिपि के रुक्त  
द्वे ते के लिए उनके निवारु पृथग्में और भभकुन के लिए  
पद्मावत गवा था। मारदूर द्विवेदी के मुख यत्कावा पर पैद्ध  
विभेदन किया गवा। पैद्धर के दी मुख वी भिन्नापर मुहित  
मुहित

मुसी भावी हए म्हणे इस्तेन किंवा गवा घा। पेम्हर में केंद्र  
मार्ग एम्बी की वाम्पुविक पटियाला और द्वारकानगर के  
द्वारा गवा की पिकलौ वर्ष ३०३० की उपलब्धियां उभे  
मुख्य स्तर का भूषण

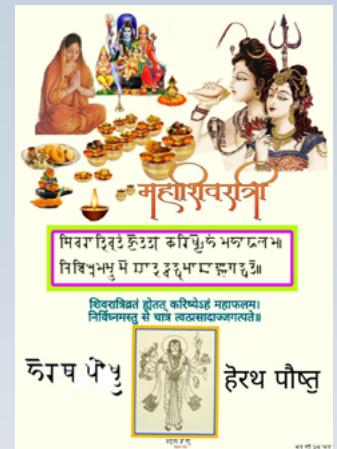
ਸੁਕਹੂਂ ਰਨੀਂ ਲੱਣੀ ਮੁਹਰੀਕੇ ਪ੍ਰਤੀ ਰੈਗਲੋਰ ਕੇ ਫੇਂਦੇ ਰਿਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਰੈਂਪ ਕੇ ਵਿਸੈਖ ਰੂਪ ਮੌ ਸਾਰਾ ਲਿੰਪਿ ਪੜ੍ਹਾ ਨਾ, ਮਤੀਪਰ ਸਾਰਾ ਢੱਡੁੱਹ ਦੀ ਕਰਨਾ ਮਹਿਤ ਵਿਚਿਤ੍ਰ ਭੀਲ ਕੇ ਪੜ੍ਹਾ ਉਚਿਕਾ ਪਾਂਤੁ ਮੈਂ ਕੇ ਮਾਥ ਰਭਾਰੋ ਨਾ ਕਾਢੁ ਰੁਭਲਤੁ ਸਾਰਾ ਲਿੰਪਿ ਕਾ ਸੁਚਾਰੁੰਚ ਹੀ ਪਿਛਲੇ ਮਾਲ ਸੁਹੂ ਕਿਧਾ ਗਥਾ ਥਾ। ਰਭਨੇ ਪਿਛਲੇ ਰਦ ਵਨ੍ਹ ਮਾਰਮੁਖ ਫੇਂਡੈ ਮੈਂ ਮੈਂਗਲੋਰ ਆਰ ਗਾ ਮੈਂ ਪੁੰਚ ਮਾਰਾ ਲਿੰਪਿ ਕੇ ਭਨ੍ਹੁੰ ਕੇ ਹੀ ਪ੍ਰਮੁਤ ਕਿਧਾ। ਉਮਕੇ ਯਲਾਵਾ ਰਭਨੇ ੩ ਮੈਂ ੦੫ ਮਾਲ ਕੀ ਉਮਕੇ ਰੋਸ਼੍ਨੀ ਕੇ ਲਿਆ ਪੈਂਦਿਗ ਆਰ ਸਾਰਾ ਲੋਪਨ ਪ੍ਰਤਿਵੰਧਿਤ ਸੁਵੰਦੇਣਿਤ ਕੀ। ੩੦੦੦ ਰੁਪਈ ਕਾ ਪ੍ਰਵਾਸ ਪ੍ਰਾਭਾਰ ਮਨਾਤੇ ਥ੍ਰੇਮ ਵੈ ਪ੍ਰਾਪੁ ਕਿਧਾ, ਨਾਂਜੁ ਈਅਮ ਵੈ ੩੦੦੦ ਰੁਪਈ ਕਾ ਦਿਵੀਂ ਪ੍ਰਾਭਾਰ ਉਥਾ ਮੋਣਲ ਸੈਨ ਵੈ ੦੦੦੦। ਰੁਪਈ ਕਾ ਤੁਹੀਂ ਪ੍ਰਾਭਾਰ ਈਤ੍ਤਾ।



**DONATE**  
If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.  
Core Sharada Team Foundation  
HDFC Bank, Airport Rd., Bangalore  
Account No: 50200054809336  
IFSC : HDFC0000075  
(RTGS / NEFT)  
(Income Tax exemption under 80G)



**इह टापी  
भूमिका भैक्ष ।  
राम नाम युक्ति  
गुडि भुम्प ॥  
गुडि भुम्प  
भुम्पी युक्ति गुडि ।  
राम विभाष  
राम्बी मुकुलामी ॥  
भूमिका  
रामी**



### Activity Cart Of Previous Month

- Concluded the ongoing sharada lipi session with Indica courses.
- 3 day Workshop on sharada lipi with national university of Australia.
- Projects related to sharada temple and sharda lipi presented to the CEO of Shringeri Mutt Dr Gauri Shankar ji.

### For Learning Sharada or any other suggestions:-

[facebook.com/Core-Sharda-Team-110148770831539](https://facebook.com/Core-Sharda-Team-110148770831539)

[instagram.com/coreshardateam](https://instagram.com/coreshardateam)

[shardalipi.com](http://shardalipi.com)

[twitter.com/CoreSharada](https://twitter.com/CoreSharada)

[maatrika.cst@gmail.com](mailto:maatrika.cst@gmail.com)

Phone - 98301 35616 / 90089 52222